मैती : एक भावनात्मक पर्यावरणीय आन्दोलन

डॉ. नवीन चन्द रजवार *

*असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास, एल.एस.एम.राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पिथौरागढ़

सारांश

पर्यावरणीय आन्दोलनों की श्रृंखला में उत्तराखण्ड से प्रारम्भ होने वाले मैती आन्दोलन का विशिष्ट स्थान है। इस आन्दोलन ने पेड़ों के साथ उस मानवीय भावनात्मक लगाव को जोड़ने में सफलता प्राप्त की है जिसकी एक पौधे को पेड़ बनने में आवश्यकता होती है। पर्यावरण संरक्षण की दिशा में मैती आन्दोलन एक अनूठी पहल है। किसी दिन विशेष वृक्षारोपण की प्रवृत्ति से बाहर निकलकर इस आन्दोलन ने प्रत्येक विशेष दिन को वृक्षारोपण से जोड़ने का कार्य बेहद सफलतापूर्वक सम्पन्न किया है। वर्तमान में यह आन्दोलन राज्य की सीमाओं से बाहर निकलकर देश–विदेश में भी लोकप्रिय हो चुका है।

शब्दसूची : *कल्याण सिंह रावत, नन्दा रथ, नैना रथ, बड़ी दीदी, मैती बहनें, मैती वन ।*

प्रस्तावना

आज सम्पूर्ण विश्व पर्यावरण प्रदूषण की समस्याओं से जूझ रहा है। यह समस्त मानव जाति के लिए चिन्ता का विषय है। विकास के नाम पर चलने वाली घातक प्रवृतियों के कारण हिमालयवासियों के सामने जिन्दा रहने का संकट पैदा हो गया है। संसाधनों की लूट–खसोट आज जिस प्रकार की जा रही है, वह दिन दूर नहीं जब यह क्षेत्र स्वच्छ हवा एवं पानी जैसे संसाधनों से भी गरीब हो जायेगा (नेगी, 2000: 14)। भू तथा वन माफियाओं द्वारा जिस तरह से इस पूरे क्षेत्र को रौंदा जा रहा है, उसके घातक परिणामों से आए दिन यहां के निवासियों को जूझना पड़ता है। उत्तराखण्ड राज्य भी इस पर्यावरणीय समस्या से अछूता नहीं है।

अपने ऐतिहासिक– धार्मिक स्थलों एवं नैसर्गिक खूबसूरती के लिए प्रसिद्ध उत्तराखण्ड प्राचीन काल से ही पर्यटकों व तीर्थ यात्रियों के लिए भी आकर्षण का केन्द रहा है। परन्तु पर्यटन विकास के नाम पर यहां के शान्त वातावरण को पंचतारा संस्कृति में परिवर्तित करने की कोशिशें निरन्तर जारी हैं। सुदूर गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ, बद्रीनाथ जैसे उच्च हिमालयी क्षेत्रों में भी पंचतारा सविधाएं मुहैया कराने की जो मुहिम चलाई जा रही है, उसके चलते आने वाली पर्यावरणीय विकृतियां स्पष्ट नजर आने लगी हैं।

पर्यावरण की यह समस्या व्यक्तिगत समस्या नहीं है, बल्कि वह मानव जाति की साझा समस्या है। आम जनमानस को इस बात को समझाना आवश्यक है कि वे अपने लिए नहीं तो अपनी भावी पीढ़ी के हितों को ध्यान में रखकर संयम, सादगी और सन्तोष का संकल्प लें व पर्यावरणीय संकट के लिए जिम्मेदार आयातित भौतिकवादी दर्शन और भोगवादी संस्कृति के प्रति आकर्षण को त्याग दें। इन्हीं उद्देश्यों के मद्देनजर समय–समय पर उत्तराखण्ड में विभिन्न जन आन्दोलनों की रूपरेखा तैयार की गई जिन्होंने उत्तराखण्ड के साथ–साथ देश एवं विदेश में भी पर्यावरणीय चेतना जागृत की तथा वन एवं पर्यावरण के साथ मानवीय सम्बन्धों को जोड़कर भावी पीढ़ी के लिए एक अनूठी धरोहर विरासत में सौंपी। उत्तराखण्ड के चमोली जनपद से आरम्भ हुआ मैती आन्दोलन इसका एक उदाहरण है।

मैती आन्दोलन

मैती आन्दोलन एक भावनात्मक पर्यावरणीय आन्दोलन है जिसकी शुरूआत सन् 1995 ईसवी में राजकीय इण्टर कॉलेज, ग्वालदम, जिला चमोली में जीव विज्ञान के प्रवक्ता कल्याण सिंह रावत द्वारा की गई थी। रावत जी के पिता व दादा दोनों ही वन विभाग में कार्यरत रहे, सो उनका बचपन भी जंगलों के बीच ही बीता। छात्र जीवन में वे 'चिपको आन्दोलन' में भी शामिल रहे। वनस्पति विज्ञान का छात्र होने के नाते भी वनों के प्रति प्रेम का भाव रहा। साथ ही सरकारी वृक्षारोपण अभियानों की असफलता से उनकी यह धारणा दृढ़ हुई कि जब तक भावनात्मक रूप से जनता को ऐसे आयोजनों के साथ नहीं जोड़ा जाएगा तब तक धरातल पर कोई परिवर्तन असंभव होगा। यह सब कारक ही मैती आन्दोलन की शुरूआत का कारण बने। वर्तमान में यह आन्दोलन पूरे उत्तराखण्ड सहित देश के अन्य भागों तथा विदेशों में भी फैल चुका है।

दरअसल, उत्तराखण्ड में 'मैत' का अर्थ होता है 'मायका' और 'मैती' का अर्थ होता है 'मायके वाले' । मैती आन्दोलन की रस्म के तहत् विवाह के समय दुल्हा–दुल्हन द्वारा फलदार वृक्ष का रोपण किया जाता है। क्योंकि ऐसा माना जाता है कि एक विवाहित लड़की के लिए उसके गाँव के पेड़ भी मायका ही होते हैं, इसलिए विवाह के समय कन्या वैदिक मन्त्रोच्चार के साथ पेड़ लगाकर उसे अपने मैती बनाने की परम्परा का निर्वाहन करती है । यही परम्परा मैती आन्दोलन का स्वरूप निर्धारित करती है (रावत, साक्षात्कारः 25 जुलाई 2015)। मायके वाले विवाहोपरांत अपनी पुत्री की याद में और उसकी खुशहाली के लिए इस पौधे का अच्छी प्रकार से पोषण करते हैं।

मैती आन्दोलन के पीछे कल्याण सिंह रावत जी की सोच यह थी कि साल भर में प्रत्येक गाँव में अनेक शादियां होती हैं। यदि प्रत्येक शादी में एक पेड़ लगाया जाए तो बहुत बड़ा जंगल विकसित हो

जायेगा। जंगल से फल व ईंधन प्राप्त होगा जिसे गाँव में निःशुल्क वितरित किया जा सकेगा व पशुओं के लिए भी चारा–पत्ती उपलब्ध होगी ।

मैती आन्दोलन के सूत्रधार कल्याण सिंह रावत बताते हैं कि मैती आन्दोलन के साथ चमोली जिले के ग्वालदम से शुरू हुआ पर्यावरण संरक्षण का यह अभियान करीब दो दशक में ही अब गढ़वाल–कुमाऊँ के गाँवों में परम्परा का रूप ले चुका है। वर्तमान में लगभग दस हजार गाँवों तक यह आन्दोलन पहुँच चुका है। और इसके तहत लगाये गये पेड़ों की संख्या लाखों में पहुँच चुकी है (रावत, साक्षात्कारः 22 जून 2016)। आज जनपद चमोली के अतिरिक्त कई अन्य जनपदों के गांवों में भी मैती संगठन बन चुके हैं।

मैती संस्था व इसकी कार्यविधि

मैती आन्दोलन के केंद्र में गांवों में स्थापित मैती संगठन होते हैं। गाँव की हर अविवाहित लड़की इस संगठन की सदस्य होती है जिन्हें मैती बहनें कहा जाता है। इसमें स्कूल जाने वाली लड़कियों के साथ घर में रहने वाली लड़कियां भी शामिल होती हैं। इस संगठन को लड़कियों के घर परिवार के साथ गाँव की महिला मंगल दल का भी सर्मथन व सहयोग प्राप्त होता है। बड़ी–बूढ़ी महिलाऐं भी मैती की गतिविधियों में शामिल होने से नहीं चूकती हैं।

संगठन को मजबूत और रचनात्मक बनाने के लिए सभी लड़कियाँ – मैती बहनें– अपने बीच की सबसे योग्य, मुखर व जागरूक लड़की को अपना अध्यक्ष चुनती हैं जिसे बड़ी दीदी (बड़ी बहिन) के नाम से जाना जाता है। बड़ी दीदी को गाँव में उतना ही सम्मान प्राप्त होता है जितना कि एक परिवार मे बड़ी बेटी को मिलता है। गाँव के मैती संगठन की देख–रेख और इसको आगे बढ़ाने का कार्य तथा नेतृत्व चुनी गई बड़ी दीदी ही करती है। जब बड़ी दीदी की शादी हो जाती है, तो बड़ी सहजता से किसी दूसरी लड़की, जो योग्य हो, को 'बड़ी दीदी' का दायित्व सौंपा जाता है और यह क्रम लगातार चलता जाता है।

मैती बहनों के द्वारा संयुक्त रूप से बैंक या पोस्ट ऑफिस में खाता खुलवाया जाता है। इस कोष को 'मैती कोष' जाता है । कई बार खाता खुलवाने की जगह गाँव की ही किसी वरिष्ठ महिला के पास संगठन का धन जमा किया जाता है।

विवाह के अवसर पर पौधारोपण हेतु प्रत्येक अविवाहित लड़की मायके में अपने घर के आस–पास किसी सुरक्षित स्थान पर अपने प्रयास से एक पौधा तैयार करती है। यह पौधा जलवायु के अनुकूल किसी भी प्रजाति का हो सकता है। मैती आन्दोलन से जुड़े जगत मर्तोलिया बताते हैं कि हर लड़की पौधे को देवता के समान या अपने जीवन साथी को शादी के समय दिये जाने वाले उपहार के समान मानकर

बड़ी तत्परता एवं शुद्ध भाव से उसका पोषण व उसकी सुरक्षा करती है। इस प्रकार गाँव में जितनी लड़कियाँ होती हैं उतने ही पौधे तैयार हो जाते हैं।

जब किसी लड़की की शादी होती है तो विदाई के समय मैती बहनों के द्वारा दुल्हा–दुल्हन को गाँव के एक निश्चित स्थान पर ले जाकर फलदार पौधा दिया जाता है। दुल्हन द्वारा तैयार किये गये पौधे को लड़कियाँ दुल्हे को यह कहकर सौंपती हैं कि यह पौधा वह निशानी या सौगात है जिसे दुल्हन ने बड़े प्रेम से तैयार किया है। दूल्हा इस पौधे को रोपित करता है, तथा दुल्हन इसे पानी से सींचती है (देखें चित्र 1) । इस प्रकार यह पौधा विवाह की एक सुखद स्मृति के रूप में तब्दील हो जाता है (मर्तोलियाः साक्षात्कार, 9 जनवरी 2012)। विवाह संपन्न होने के बाद मैती बहनों द्वारा ही इस पौधे को खाद–पानी दिया जाता है तथा जानवरों से भी इसकी रक्षा की जाती है (रावतः साक्षात्कार, 25 जुलाई 2015)। पौधारोपण के समय दूल्हा अपनी इच्छा से मैती बहनों को पैसा भी देता है। मैती बहनों को जो पैसा दूल्हे द्वारा स्वेच्छा से दिये जाते है उसे मैती कोष में जमा कर दिया जाता है। इस प्रकार मैती बहनों को संगठन के कार्यों के लिए अपने स्तर पर संसाधनों को जुटाने की आवश्यकता नहीं रहती। इस कोष में एकत्र राशि ही पर्याप्त होती है। इस धनराशि को गरीब बच्चों की पढ़ाई अथवा अन्य सामाजिक कार्यों पर खर्च किया जाता है। गाँव की किसी ऐसी स्त्री, जिसके पास घास काटने जाने के लिए चप्पल नहीं है, के लिए चप्पलें भी खरीद ली जाती हैं । या गरीब बहिनों के लिए कपड़े या स्वैटर आदि खरीद लिए जाते हैं। गरीब बच्चों की किताबों व स्कूल का बैग या पर्यावरण संरक्षण के लिए भी इस धनराशि को खर्च किया जा सकता है।

चित्र 01: विवाह के अवसर पर पौधा रोपते दुल्हा–दुल्हन (स्रोतः व्यक्तिगत संकलन, कल्याण सिंह रावत)

वर्तमान में मैती आन्दोलन की व्यापकता इतनी बढ़ गई है कि इसके लिए पर्चे, पोस्टर और बैठकें या सभा करने की आवश्यकता नहीं है। मायके में रहने वाले मैती बहनें शादियों के दौरान दूल्हे से पौधे लगवाने की रस्म को खुद–ब–खुद अंजाम देती हैं। विवाह के समय पौधारोपण की इस रस्म के स्वयंस्फूर्त तरीके से फैलने का एक कारण बारात में आये लोग भी होते हैं जो अपने गाँव जाकर इस आन्दोलन की चर्चा करते हैं तथा इस परम्परा को आरम्भ करने से स्वयं भी पीछे नहीं हटते । शादी कराने वाले पण्डित भी इस आन्दोलन का प्रचार–प्रसार करते हैं। शादी के कार्यक्रमों में भी मैती कार्यक्रमों का जिक्र किया जाता है (देखें चित्र 2)।

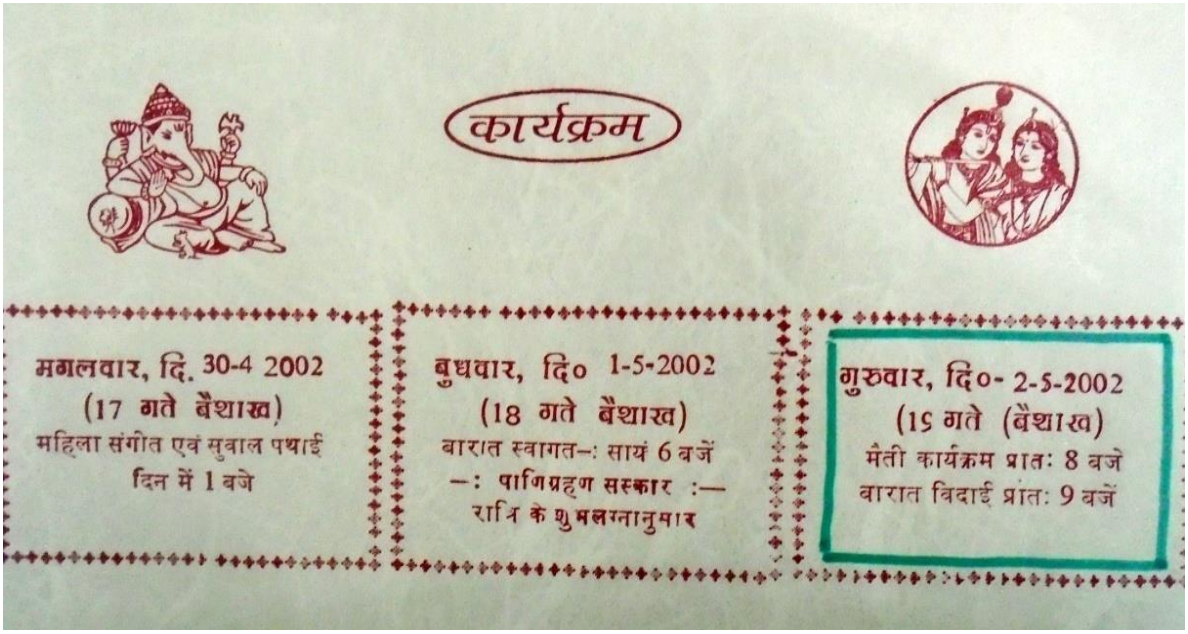

चित्र 2: वैवाहिक आमंत्रण पत्र पर मैती कार्यक्रम का जिक्र (स्रोतः व्यक्तिगत संकलन, कल्याण सिंह रावत)

मैती आन्दोलन की अन्य रचनात्मक गतिविधियाँ

मैती आन्दोलन अब केवल विवाह के अवसर पर दुल्हा–दुल्हन से पौधा लगवाने तक ही सीमित नहीं रह गया है, बल्कि इस आन्दोलन के प्रणेता श्री रावत ने इस भावनात्मक आन्दोलन को बहुमुखी बनाने में भी कामयाबी पाई है। मैती आन्दोलन वैचारिक तौर पर वृहद स्वरूप धारण करता हुआ निरंतर आगे बढ़ रहा है वं नई–नई पहलों के माध्यम से जनमानस के बीच लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। इसी प्रक्रिया के तहत वैलेन्टाइन–डे जैसे आयातित आयोजन पर भी गुलाब देने तथा लेने की प्रथा से आगे निकल कर 'एक युगल एक पेड़' कार्यक्रम जोड़ दिया गया है। अब उत्तराखण्ड के कुछ स्थानों पर प्रेमी जोड़े

अपने प्रेम को यादगार बनाने के लिए पेड़ लगाते हैं (देखें चित्र 3)। इस तरह का प्रथम कार्यक्रम देहरादून स्थित गाँधी पार्क में किया गया था (दैनिक जागरण, 15 फरवरी 2006: 7)।

कल्याण सिंह रावत कहते हैं कि " वैलेन्टाइन–डे का हमारे देश में काफी विरोध होता है, परन्तु फिर भी युवाओं का आकर्षण उसकी ओर बढ़ता जा रहा है। तो हम इसका विरोध नहीं करते । बल्कि हमारा यह प्रयास होता है कि वैलेन्टाइन–डे पर फूल देने–लेने की जगह प्रेमी युगल स्मृति के रूप में एक पौधा लगाएँ और उसकी सुरक्षा का संकल्प लें । " वे आगे कहते हैं कि जिस पेड़ को आप आज झुककर लगाते हैं, पाँच साल में वह इतना बड़ा हो जाता है कि आप उसे सर उठा कर देखते हैं (रावत, साक्षात्कार: 22 जून 2016)।

चित्र 3: वैलेन्टाइन–डे पर वृक्षारोपण करता एक युगल (दैनिक जागरण, 15 फरवरी 2006)

मैती आंदोलन की उप्लब्धियाँ

मैती आन्दोलन का फलक उत्तरोत्तर व्यापक होता जा रहा है। मसलन, जब उत्तरकाशी में मोरी ब्लाक के अन्तर्गत किरौली में स्थित एशिया का सबसे बड़ा वृक्ष गिर गया तो मैती बहनों ने एक–एक पौधा इस वृक्ष के महाप्रयाण की याद में लगा कर उसे विदाई दी। साथ ही, उसकी जगह हर साल नई प्रजाति के पौधे रोपने का भी संकल्प लिया (गढ़वाल पोस्ट, 29 जुलाई 2007: 3)।

इसके अतिरिक्त मैती संस्था पशु–बलि जैसी सामाजिक व्याधियों के खिलाफ़ भी संघर्षरत रहती है। उन्हीं की पहल पर आज गढ़वाल के बुखाल, चन्द्रबदनी, मठियाणा खाल, कालीमठ सहित अनेक मन्दिरों में पशुबलि के खिलाफ लोगों में चेतना जागृत हुई है। इसके परिणामस्वरूप बुखाल मंदिर में – जहाँ लगभग चार सौ भैंसों और खाडुओं (नर भेड़ों) की बलि दी जाती थी– पशु–बलि के मामलों में काफी हद तक कमी आई है तथा पशु–बलि पर प्रशासनिक हस्तक्षेप भी बढ़ा है।

मैती बहनों द्वारा पर्यावरण संरक्षण और वन्य प्राणियों की रक्षा के लिए मेलों व अभियानों का आयोजन भी किया जाता है। उदाहरणार्थ, मैती संस्था द्वारा बिनसर और सरनौल आदि में वन्य जीव संरक्षण के प्रति चेतना जागृत करने के लिए आठ सौ किलोमीटर की पद यात्रा का आयोजन किया जा चुका है (युगवाणी, मार्च 2015: 27)। वन्य जीवों के संरक्षण तथा उनके प्रति दया भाव जगाने हेतु होने वाले इस प्रकार के आयोजनों को 'वन्य जीव ज्योति यात्रा' कहा जाता है। इसके अन्तर्गत 'कार्बेट–नन्दादेवी वन्य जीव ज्योति यात्रा', 'नन्दादेवी–देहरादून वन्य जीव ज्योति यात्रा', 'अस्कोट–देहरादून वन्य जीव ज्योति यात्रा' व 'पुरोला–देहरादून वन्य जीव ज्योति यात्रा' आयोजित की जा चुकी हैं। प्राकृतिक आपदाओं के कारणों व प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रति जनचेतना जगाने हेतु 1998 में 'देवभूमि क्षमा यात्रा' का आयोजन भी किया जा चुका है।

इसी तरह मैती संस्था ने रूद्रनाथ बुग्याल में जड़ी–बूटी दोहन के खिलाफ भी संघर्ष किया। मैती बहनों ने चमोली जिले के पातला गाँव सहित कई अन्य गाँवों को गोद लेकर पूर्ण साक्षर बनाने में भी कामयाबी पाई है। मैती संस्था द्वारा पर्यावरण संरक्षण के विभिन्न कार्यक्रमों में भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई जाती रही है। कुमाऊँ और गढ़वाल विश्वविद्यालयों के रजत जयन्ती समारोह में 1998 में मैती संस्था की ओर से एक वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसके तहत् श्रीनगर व नैनीताल से निकले दलों ने 'नन्दा रथ' व 'नैना रथ' के माध्यम से एक–दूसरे विश्वविद्यालय परिसरों में जाकर ऐतिहासिक वृक्षारोपण किया (रावत, साक्षात्कार: 22 जून 2016)। वन शोध संस्थान, देहरादून के शताब्दी वर्ष 2006 में मैती संस्था द्वारा ग्रामीणों में स्वास्थ्य चेतना तथा युवाओं में खेलकूद के प्रति जागरूकता के लिए कार्यक्रम आयोजित किए गए।

मैती संस्था द्वारा इस तरह के रचनात्मक कार्यक्रमों की एक लम्बी श्रृंखला है। मैती आंदोलन से जुड़े वेनीराम अंथवाल बताते हैं कि किस प्रकार टिहरी बाँध–निर्माण के कारण जलमग्न होने वाले टिहरी शहर के पैंतीस ऐतिहासिक स्थलों की मिट्टी लाकर मैती स्वयंसेवकों द्वारा गढ़वाल विश्वविद्यालय के स्वामी रामतीर्थ परिसर, बादशाहीथोल में अलग–अलग गढ्ढों में स्थापित की गयी। तदोपरांत उनमें प्रत्येक स्थल की स्मृति में एक–एक पौधा लगाया गया। इन स्थलों की स्मृति को चिरस्थायी करने के उद्देश्य से किए गए इस प्रयास को 'लोकमाटी वृक्ष अभिषेक समारोह' का नाम दिया गया (देखें चित्र 4)।

A bit of Old Tehri town preserved for eternity

UTPAL Parashar
Dehra Dun, December 27

OLD TEHRI is no more. The town set up in 1815 by Maharaja Sudarshan Shah as his capital now lies submerged below Tehri Dam's reservoir.

But there's still a portion of the dead town preserved barely 10 kilometres away.

Worried that the 190-year-old town would get erased from the world map, a group led by Kalyan Singh Rawat of the Maiti Movement havecollected soil from 35 important places in Old Tehri and tried to preserve it by planting trees.

On Tuesday, local women dressed in traditional attire and school and college children collected water from Suman Sagar (the dam reservoir) and performed 'Jal Abhishek' by pouring water on the Deodar trees planted at Badshahithaul.

"We decided to perform the function on the eve of Old Tehri's 191st birthday to show the world that the town is not lost forever. Parts of it is still alive," said Rawat about the programme titled 'Tehri Lok Mati Vriksh Abhishek.

The idea of preserving Old Tehri for eternity by saving a portion of its soil struck Rawat when the first two tunnels of the project were closed in December 2001 putting a seal of inevitability on the town's imminent death.

Encouraged by support from the town's residents, volunteers from Maiti Movement collected 35 sacks of soil from Old Tehri and brought them to the premises of Swami Ram Teerth Degree College at Badshahithaul.

In order to preserve the town's history, soil was collected from important places like temples, mosque, gurdwara, Geeta Bhawan, Clock Tower, Purana Durbar, Azad Maidan, Chana Khet and Pradarshini Maidan.

"Apart from preserving the town for eternity by planting trees on its soil, the idea was to show the world how attached people of Uttaranchal are to their roots and their concern for conservation and environment," said Rawat.

The attempt has drawn appreciation from noted environmentalist Sunderlal Bahuguna. "But instead of conducting 'Jal Abhishek' with impure waters from the dam's reservoir, which has stopped Bhagirathi's flow, water should have been brought from some other place," he said.

Selling Fast Order Today
Swamy's Handbook 2006
(English Edition only)
by muthuswamy and brinda
Do not miss to look for the ELEPHANT LOGO in the multicoloured hologram on all our books
Incorporating latest orders — over 286 subjects
Master Diary - 2006 (Complimentary)
Handbook

चित्र 4: लोकमाटी वृक्ष अभिषेक समारोह (गढ़वाल पोस्ट, 27 दिसम्बर 2006: 5)

मैती संस्था द्वारा उत्तराखण्ड के विभिन्न स्थानों पर 'मैती वनों' की स्थापना भी की जा चुकी है। मसलन, वर्ष 2000 तथा वर्ष 2014 में आयोजित 'श्री नन्दा देवी राजजात' के समय नन्दासैंण में 'श्री नन्दा देवी मैती वन' की स्थापना की गई। आज इसमें रोपे गए बाँज एवं अन्य प्रजातियों के लगभग दस हजार पौधे एक आकर्षक वन का आकार ले चुके हैं (देखें चित्र 5)।

चित्र 5: नन्दादेवी राजजात स्मृति वन (स्रोतः व्यक्तिगत संकलन, कल्याण सिंह रावत)

मैती संस्था के कोषाध्यक्ष हरीश वशिष्ठ बताते हैं कि संस्था द्वारा पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्द्धन की दिशा में जन–जागरूकता फ़ैलाने के उद्देश्य से उत्तराखण्ड के कई स्थानों पर पर्यावरण एवं विकास मेलों की शुरूआत की गई है। ये मेले प्रतिवर्ष भव्य रूप में मनाये जाते हैं। इनमें से श्रावणी पर्यावरण

मेला असेड़–सिमली (चमोली), पर्यावरण एवं विकास मेला नन्दा सैंण (चमोली), इन्दिरा गांधी पर्यावरण एवं खेलकूद सांस्कृतिक मेला राजगढ़ी (चमोली), पर्यावरण मेला हँसकोटी (चमोली) व पर्यावरण स्वच्छता मेला कोट भ्रामरी डंगोली (बागेश्वर) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं (वशिष्ठ, साक्षात्कारः 13 मार्च 2013)।

मैती संस्था द्वारा विभिन्न अवसरों को वृक्षारोपण से जोड़ने के लिए अभिनव प्रयास किए गए हैं। संस्था के सचिव महेन्द्र सिंह रावत बताते हैं कि संस्था द्वारा 2010 में उत्तराखण्ड सरकार के साथ संयुक्त तत्वावधान में वृक्षारोपण अभियान चला कर मात्र एक घंटे में पूरे राज्य में कुल 12 लाख 59 हजार पौधों को लगा कर ऐतिहासिक कीर्तिमान बनाया गया (देखें चित्र 6)। इसके पूर्व 2007 में भी संस्था की पहल पर नव–निर्वाचित ग्राम–प्रधानों व जिला पंचायत सदस्यों द्वारा वृक्षारोपण (देखें चित्र 7) किया गया था (गढ़वाल पोस्ट, 19 सितम्बर 2007: 4)। मैती संस्था द्वारा चमोली में कारगिल शहीदों की स्मृति में 'शौर्य वन' का निर्माण भी किया गया।

pioneer uttarakhand

Uttarakhand villagers plan 'Earth Hour', but with eco-concerns

चित्र 6 (पायनियर, 27 मार्च 2010)

Maiti Movements urges new Pradhans to plant trees

By OUR STAFF REPORTER
DEHRADUN, 19 Sept: The Maiti Movement has appealed to all newly elected village Pradhans and members of Chhetra Panchayats to plant a tree each in celebration of their victories. The Panchayat polls have just concluded.Commenting on the move, Kalyan Singh Rawat, founder of the Maiti Movement, said, "It is my appeal to all the newly elected Pradhans and members of Chhetra Panchayats to plant trees in their

Abhiyan. "The village Pradhan is head of his Village's Education Committee. He can plant the tree at the school campus. We can create a 31 hectare orchard by implementing this plan.

In case this proposal gets approved from the Sarva Shiksha Abhiyan, the Maiti Movement will introduce a 'Taru Shree Award' to felicitate the best maintained tree planted under the campaign.

The Maiti Movement is a

चित्र 7 (गढ़वाल पोस्ट, 19 सितम्बर 2007)

मैती संस्था के अन्य रचनात्मक कार्यक्रमों में वन्य–जीव संरक्षण शिविरों का आयोजन, नर्सरियों का निर्माण, हिमालयी बुग्यालों की सफाई व बद्रीनाथ धाम में भोज पत्रों का रोपण आदि शामिल रहे हैं (रावत, साक्षात्कारः 22 जून 2016)।

इसके अतिरिक्त संस्था द्वारा 1998 से ही पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्द्धन के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वालों को प्रोत्साहित करने हेतु 'मैती सम्मान' दिया जा रहा है। अब तक 18 लोगों को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

प्रवासियों को पर्यावरण संरक्षण के अभियान से जोड़ने के लिए भी मैती संस्था अभिनव प्रयोग कर रही है। 'मैती ग्राम गंगा अभियान' ऐसा ही एक प्रयोग है। इसके तहत सभी प्रवासी परिवारों से पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रति दिन एक रूपया बचाने व प्रत्येक 05 जून (पर्यावरण दिवस) को इस प्रकार एकत्र की गयी राशि अपने गाँव भेजने की अपील की जाती है। इस धनराशि से 'मैती ग्राम गंगा

समिति' के सदस्यों द्वारा प्रवासी परिवार के पैतृक घर, आंगन या खेत में एक पौधा लगाकर उसकी रक्षा की जाती है। इस प्रकार जहाँ प्रवासी परिवारों का अपनी जन्मभूमि से भावनात्मक संबंध प्रगाढ़ होता जाता है वहीं धीरे–धीरे गाँवों में एक घना जंगल भी आकार लेने लगता है (देखें चित्र 8) । इन प्रयासों से निःसन्देह मैती आन्दोलन केवल भावनात्मक न होकर संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण का परिचायक बन गया है (बलोदी, 2008ः 202)।

चित्र 8ः मैती ग्राम गंगा अभियान का मुखपत्र

मैती आन्दोलन का प्रभाव

मैती आन्दोलन को आगे बढ़ाने व जन–जन तक पहुँचाने में विभिन्न पत्रकारों, बुद्धिजीवियों, समाजसेवियों एवं पर्यावरण प्रेमियों की भी महत्तवपूर्ण भूमिका रही है । सर्वप्रथम 'हिन्दुस्तान टाइम्स' द्वारा मैती आन्दोलन पर एक लेख छापा गया। बी.बी.सी. द्वारा 1996 में इस पर एक डॉक्यूमेंट्री प्रसारित की गई। टाइम्स ऑफ इण्डिया व इण्डिया टुडे में भी समय–समय पर इस आन्दोलन पर खबर छपीं। जी इण्डिया द्वारा इस पर एक लघु फिल्म का प्रसारण किया गया। सॉन्ग एण्ड ड्रामा डिवीजन, भारत सरकार द्वारा भी मैती आन्दोलन पर केंद्रित एक नृत्य नाटिका का प्रसारण किया जा चुका है। इन सब के परिणामस्वरूप यह आन्दोलन देश के कई राज्यों के अतिरिक्त विदेशों में भी विस्तार पा चुका है। हिमाचल के सौलन, किन्नोर व कांगडा जिलों में भी पर्यावरण संरक्षण की चेतना जागृत करने के लिए मैती आन्दोलन आरम्भ किया गया है। मैती आन्दोलन की तर्ज पर इण्डोनेशिया सरकार ने कानून बनाया कि शादी के अवसर पर नव दम्पत्ति द्वारा एक पेड़ लगाना आवश्यक होगा। अब कनाडा, अमेरिका,

आस्ट्रिया, नार्वे, चीन, थाईलैण्ड, इण्डोनेशिया और नेपाल में भी विवाह के मौके पर पेड़ लगाये जाने लगे हैं।

एक समय कनाडा की वित्त मंत्री रहीं फ्लोरा डोनाल्ड ने मैती आन्दोलन को अपने जीवन का सबसे प्रेरणादायक तथा रचनात्मक आन्दोलन बताया। उत्तराखण्ड की पूर्व राज्यपाल मारग्रेट आल्वा व कनाडा यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर माया चड्ढा जैसे अनेक नामी लोगों ने इस आन्दोलन को आत्मसात कर आगे बढ़ाने की प्रेरणा दी है।

उपसंहार

मैती आन्दोलन की भावना से अभिभूत होकर अब लोग जहां पेड़ लगा रहे हैं, वहीं उनका व्यवहार भी बदल रहा है। पर्यावरण के प्रति आम जन की सोच में परिवर्तन आ रहा है। यही वजह है कि लोग अब अपने आस–पास के जंगलों के संरक्षण व संवर्द्धन में भी सहयोग करने लगे हैं। इस आन्दोलन के चलते पहाड़ों पर काफी हरियाली दिखने लगी है। गाँवों में जंगलों की श्रृंखलाऐं सजने लगी हैं।

मैती आन्दोलन की इस सफलता का मुख्य आधार 'भावनात्मकता' है। मनुष्य का प्रकृति के साथ भावनात्मक सम्बन्ध रहा है। इसी सम्बन्ध को आधार बनाकर यह आन्दोलन एक छोटे से गाँव से शुरू होकर आज विश्व परिदृश्य पर अपनी छाप छोड़ने में सफल रहा है एवं निरंतर विस्तृत स्वरूप धारण करता जा रहा है। इस आन्दोलन का एक और सबल पक्ष पौधे के पेड़ बनने तक की एक ठोस योजना का होना है। राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पर्वों को वृक्षारोपण आयोजनों से जोड़ने जैसे रचनात्मक प्रयोगों ने भी इस आन्दोलन को एक व्यापक फलक दिया है।

इस प्रकार मैती आन्दोलन सम्पूर्ण विश्व में एक नई पहल कर धरती की हरियाली बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है व वैश्विक पर्यावरणीय समस्या के समाधान का मार्ग दिखा रहा है।

सन्दर्भ सूची

बलौदी, आर., 2008, उत्तराखंड समग्र ज्ञानकोश, विनसर पब्लिशिंग कंपनी, देहरादून।

नेगी, एस. एस., 1994, इण्डियन फॉरेस्ट्री थ्रो दि एजेज, इण्डस पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

दैनिक जागरण, 15 फरवरी 2006, देहरादून।

गढवाल पोस्ट, 27 दिसम्बर 2006, देहरादून।

गढवाल पोस्ट, 19 सितम्बर 2007, देहरादून।

गढवाल पोस्ट, 29 जुलाई 2007, देहरादून।

नैनीताल समाचार, 15 दिसम्बर 1977, नैनीताल।

पायनियर, 27 मार्च 2010, दिल्ली।

युगवाणी, मार्च 2015, देहरादून।

मर्तोलिया, जगत सिंहः साक्षात्कार, 09 जनवरी, 2012।

रावत, कल्याण सिंहः साक्षात्कार, 22 जून 2016।

वशिष्ठ, हरीशः साक्षात्कार, 13 मार्च 2013।

Corresponding Author: **डॉ. नवीन चन्द रजवार**